# भारतीय समाज की विशेषताएँ
# (Characteristics of Indian Society)

भारतीय समाज एवं संस्कृति मानव समाज की एक अमूल्य निधि है। यदि संसार की कोई संस्कृति अमर कही जा सकती है तो निस्सन्देह वह भारतीय संस्कृति ही है जो अपनी समस्त आभा और प्रतिभा के साथ चिरकाल से स्थायी है। अपने सुदीर्घ इतिहास में भारतवासियों ने एक ऐसी समाज-व्यवस्था एवं संस्कृति का विकास किया जो अपने आप में मौलिक, अनूठी और विश्व की अन्य संस्कृतियों एवं समाज-व्यवस्थाओं से भिन्न है। इस देश के महापुरुष, तीर्थस्थान, प्राचीन कलाकृतियाँ, धर्म, दर्शन और सामाजिक संस्थाएँ भारतीय समाज एवं संस्कृति के सजग प्रहरी रहे हैं। इस देश की संस्कृति को अजर-अमर बनाने में इन्होंने भारी योगदान दिया है। हम यहाँ भारतीय समाज एवं संस्कृति की उन विशेषताओं का उल्लेख करेंगे, जिनके कारण हजारों साल बीत जाने पर वह आज भी जीवित हैं।

1. **प्राचीनता एवं स्थायित्व–** भारत की संस्कृति एवं समाज व्यवस्था विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों एवं समाज व्यवस्थाओं में से एक है। समय के साथ-साथ मिस्र, सीरिया, यूनान, रोम आदि की प्राचीन संस्कृतियाँ नष्ट हो गईं और उनके अवशेष मात्र ही बचे हैं, किन्तु हजारों वर्ष बीत जाने पर भी भारत की आदि संस्कृति व समाज व्यवस्था आज भी जीवित है। आज भी हम भारत में वैदिक धर्म को मानते हैं, पवित्र वैदिक मंत्रों का यज्ञ एवं हवन के समय ब्राह्मणों द्वारा उच्चारण किया जाता है। विवाह वैदिक रीति से होता है। ग्राम-पंचायत, जातिप्रथा, संयुक्त परिवार प्रणाली आज भी विद्यमान है। गीता, बुद्ध और महावीर के उपदेश आज भी इस देश में जीवित और जाग्रत हैं। आध्यात्मवाद, प्रकृति-पूजा, पतिव्रता धर्म, कर्म और पुनर्जन्म, सत्य, अहिंसा और अस्तेय के सिद्धान्त की गूंज आज भी इस देश के लोगों को प्रेरित करती है। सदियाँ बीत गयीं, अनेक परिवर्तन हुए, विदेशी आक्रमण हुए, किन्तु भारतीय समाज व संस्कृति का दीपक आज भी प्रज्ज्वलित है, उसका अतीत वर्तमान में भी जीवित है।

2. **समन्वयवादी दृष्टिकोण–** जनजातीय, हिन्दू, मुस्लिम, शक, हूण, ईसाई आदि सभी संस्कृतियों के प्रभाव से भारतीय संस्कृति नष्ट नहीं हुई वरन् उनसे समन्वय एवं एकता ही स्थापित हुई है। मुसलमानों के सम्पर्क से 'दीनईलाई' धर्म पनपा। मुसलमानों का सूफी सम्प्रदाय भारत के आध्यात्मवाद, योग, साधना और रहस्यवाद का संस्करण है। राम और रहीम, कृष्ण और करीम की एकता सथापित कर महापुरुषों द्वारा हिन्दू और इस्लाम धर्म में समन्वय करने का प्रयत्न किया गया है। इसी प्रकार से बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म का ही अंग बन गया है। डडवेल ने भी कहा है कि भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है जिसमें अनेक

नदियाँ आकर मिलती हैं। भारतीय समाज एवं संस्कृति में समन्वय की महान शक्ति है, जो निरन्तर गतिमान रही है और आज तक विद्यमान है।

3. **आध्यात्मवाद–** धर्म और आध्यात्मिकता भारतीय समाज व संस्कृति की आत्मा है। भारतीय संस्कृति में भौतिक सुख और भोग-लिप्सा को कभी भी जीवन का ध्येय नही माना गया। यहाँ आत्मा और ईश्वर के महत्त्व को स्वीकार किया गया है और शारीरिक सुख के स्थान पर मानसिक एवं आध्यात्मिक आनन्द को सर्वोपरि माना गया है। इसमें भोग और त्याग का सुन्दर समन्वय पाया जाता है।

4. **धर्म की प्रधानता–** भारतीय समाज के जनजीवन पर वेदों, उपनिषदों, पुराण, महाभारत, रामायण, भागवद् गीता, कुरान एवं बाइबिल का अत्यधिक गहरा प्रभाव है। इन महान् ग्रन्थों ने यहाँ के लोगों को आशावादिता, आस्तिकता, त्याग, तप, संयम आदि का पाठ पढ़ाया है। भारत के लोग सूर्योदय से सूर्यास्त तक तथा जन्म से मृत्युपर्यन्त अनेक धार्मिक कार्यों की पूर्ति करते हैं।

5. **सहिष्णुता–** भारतीय समाज एवं संस्कृति की एक महान् विशेषता इसकी सहिष्णुता है। भारत में सभी धर्मों, जातियों, प्रजातियों एवं सम्प्रदायों के प्रति उदारता, सहिष्णुता एवं प्रेमभाव पाया जाता है। हमारे यहाँ समय-समय पर अनेक विदेशी संस्कृतियों का आगमन हुआ और सभी को फलने-फूलने का अवसर दिया गया। हमारे द्वारा असहिष्णु होकर कभी भी विदेशियों एवं अन्य संस्कृति के लोगों पर बर्बर अत्याचार नहीं किए गए।

6. **अनुकूलनशीलता–** भारतीय संस्कृति को अमर बनाने में इसकी अनुकूलनशील प्रवृत्ति का महान योगदान है। भारतीय संस्कृति अपने दीर्घ जीवन के लिए समय चक्र और परिस्थितियों के अनुसार सदैव समाज के साथ सामञ्जस्य करती रही है, जिसके परिणामस्वरूप यह आज तक बनी रही है। भारतीय परिवार, जाति, धर्म एवं संस्थाएँ समय के साथ अपने को परिवर्तित करते रहे हैं।

7. **विचार और आदर्श–** भारतीय संस्कृति में कुछ ऐसे तत्त्व हैं, जो युग-युगान्तर तक व्यक्ति के अस्तित्व के आधार होते हैं। 'सादा जीवन उच्च विचार' का सिद्धांत अपरिग्रह को श्रेष्ठता प्रदान करता है। इसी प्रकार इस आदर्श और विचारधारा से प्रेरणा प्राप्त करने वाला प्रत्येक प्राणी विश्व कुटुम्ब का सदस्य होता है। वह विश्व को एकता का पाठ पढ़ाता है तथा सबको एक सूत्र (वसुधैव कुटुम्बकम्) में बाँधता है। भारतीय समाज और संस्कृति के ऐसे आदर्श और विचार सदैव एकता को बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं।

8. **वर्णाश्रम–** प्राचीन भारतीय संस्कृति की उल्लेखनीय विशेषता है-वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था। समाज में श्रमविभाजन हेतु चार वर्णों-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्ण की रचना की गयी। ब्राह्मण समाज, बुद्धि और शिक्षा के प्रतीक हैं जो क्षत्रिय, शक्ति के। वैश्य भरण-पोषण एवं अर्थ-व्यवस्था का संचालन करते हैं तो शूद्र समाज की सेवा करते हैं।

# भारतीय समाज : प्रमुख लक्षण (विशेषताएँ), एकता एवं विविधता

## (Indian Society : Major Featurs—Unity and Diversity)

भारतीय समाज व संस्कृति अति प्राचीन व गौरवपूर्ण है। वास्तव में किसी भी समाज की संस्थाओं का स्वरूप और उसका संगठन उस समाज की संस्कृति द्वारा निर्धारित और संगठित होता है। अतः किसी भी समाज की संरचना और संस्कृति में एकता और विविधता का सिंहावलोकन करने के लिए उसकी सांस्कृतिक विशेषता का अध्ययन अनिवार्य होता है। इस दृष्टिकोण से जब हम भारतीय समाज और संस्कृति को देखते हैं तो ज्ञात होता है कि भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता उसकी सहिष्णुता व ग्रहणशीलता और गत्यात्मक प्रकृति है। इस प्रकृति का विशाल स्रोत विभिन्नता में एकता है।

भारतीय समाज में आर्य, अनार्य, द्रविड़, शक, हूण, पुर्तगाली, फ्रांसिसी तथा मंगोल, पारसी आदि अनेक प्रजातियों के लोग समय-समय पर यहाँ आये और यहाँ की संस्कृति के रंग में रंगते हुए राष्ट्रीय धारा में समा गये। इतना ही नहीं बल्कि विश्व की विभिन्न संस्कृतियों, विचारों, दर्शनों, धर्मों, भाषाओं आदि के प्रति सहनशीलता का परिचय देते हुए उन्हें अपने में समाहित किया है। फलतः भारतीय समाज एवं संस्कृति विभिन्नताओं की एक लीलाभूमि बन गया है। इन्हीं विविधताओं को देखकर कुछ विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत विभिन्न जातियों, प्रजातियों, धर्मों, भाषाओं, प्रथाओं एवं परम्पराओं का एक गड़बड़झाला देश है और इसकी संस्कृति में एकता का नितान्त अभाव है, किन्तु ऐसा निष्कर्ष भारतीय समाज, संस्कृति एवं जनजीवन की ऊपरी सतह देखकर लिया गया और इसकी आंतरिक मूलभूत एकता अनदेखी ही रह गई।

यद्यपि भारतीय समाज और संस्कृति का बाह्य स्वरूप अनेक विभिन्नताओं का पुंज है, किन्तु इसका आन्तरिक स्वरूप एक है, मौलिक व अखण्ड रूप में एक है। इस अध्याय में